R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 24वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

वर्ष 24 | अंक 15 | रविवार, इलाहाबाद, 25 अगस्त 2024 | पृष्ठ 6 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

संपादकीय

महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक

कान्हा का जन्मोत्सव आज,
जगह-जगह झांकी सजी ।
मनमोहन की लीला उसमें ,
भोग लगे काजू मिश्री ।

कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर, इस बार का महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक का निकलना कितना सुंदर लग रहा है। एक तरफ मनमोहन की लीला, कथाओं से पूरा जगत सराबोर जैसा लग रहा है, वहीं दूसरी तरफ रचनाकारों की विविध पूर्ण रचनायें मन प्रफुल्लित, आनंदित कर रही है । इस बार महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक में जो रचनाकारों की रचनाएं शामिल है उनमें से कुछ की बानगी देखिये

पहली बानगी

हे हंस वाहिनी मां तुम्हारा
स्वरूप स्नेह का सागर है
भर देती हो ज्ञान उसमें
जिसकी खाली गागर है !

दूसरी बानगी

अगर तुम मायूस हो, उदास हो
अपने जीवन से निराश हो ,हताश हो
तो जीवन तुम्हारा निरर्थक है
तुम जीते जी मृतक समान हो ।
अपने जीवन को कभी अंधेरे में
गुम मत होने दो
नाकामयाबी के दलदल में
कभी खुद को धंसने मत दो
अपने जीवन को सार्थक बनाओ
अपनी मुश्किलों को
मुस्कुरा कर सुलझाओ ।

तीसरी बानगी

लहरों में नाव सी ये, निम्बिया की छांव सी ये।
हरे भरे गांव सी ये ,होती बहुरानियां।
सरदी की धूप सी ये,ममता स्वरूप सी ये।
प्रेम वाले मोती नित, बोती बहुरानियाँ।

इस बार महिला काव्य गोष्ठी विशेषांक के साथ पुरुष काव्य गोष्ठी में पढ़ी गई रचनाओं को भी शामिल किया गया है । इस बार की पुरस्कृत रचना बिजनौर की अर्चना चौहान की है । अर्चना चौहान की रचनाओं के विविध आयाम है । इस रचना को पढ़िए और बताइए कि यह अंक आपको कैसा लगा । प्रक्रिया जरूर दें ।

अंत में -

कान्हा कान्हा रटते रटते ,
गोप हो गई बांवारी ।
दूध दही और माखन मिश्री ,
देते हो गई सांवारी ।

उमेश श्रीवास्तव

पुरस्कृत रचना

एक पैर पर खड़ा है बगुला

एक पैर पर खड़ा है बगुला
बन घातक तन ताक लगाए
जल में ही छुप जा मछरिया
क्यों उछल उछल दिखलाए
कोमल कोमल तन है तेरा
बगुला नोच नोच उड़ जाये
बचे हुए अस्थि पिंजर में
बस दुर्गंध पड़ जाए
मछलियां क्यों
उछल दिखलाए
नदियां सी निश्चल काया
निर्झर बहती जाए
खारे सागर में मिल
क्यों अपना सर्वस्व गंवाए
मछलियां क्यों ....
निष्ठुर हाथों में पड़
ठसक लगे बिखराएँ
टुकड़े टुकडे तन तेरा
तुझको ही चुभ चुभ जाए
मछरिया..................।
फूलों सी सुंदर काया
संदल सी में महकाए
तोड़ के राही मसले उसको
अपनी प्यास बुझाए
मछरिया................।
हिरन खाल में छुपा भेड़िया
देख खल ललचाए
घड़ियाल आँसू लेकर
सोहनजाल बिछाए
हाँ सोहन जाल बिछाए
मछलियां..................

अर्चना चौहान

कवितायेँ

सावन मनभावन

बिजुरिया की गर्जन तरजन पर
सुर ताल छिड़ गई,
बादलों की पालकी पे ,
बरखा आ गई।

मेघ मल्लहार की धुन ,
मन को रिझा गई,
सावन की घनघोर घटा ,
बदरी पे छा गई।

कोयल की कूहूक के,
स्वर सुना गई,
पन्ख फैला गगन में
उड़ने की चाह जगा गई।

मतवाला है मोर, मोरनी
मदमस्त हो गई
झरनों की बहती धाराऐ,
जलतरंग बजा गई।

तपती धरा के मुखड़े पर
चंदन लेप लगा गई,
हरियाली चूनर ओढ़े
अवनि अंबर को भा गई।

बिजुरिया की तरजन गर्जन से
चकाचौंध मच गई
सावन की मनभावन बरखा, धरा
आँचल भिगो गई।

बिजुरिया की गर्जन तरजन पर सुर
ताल छिड़ गई,
बादलों की पालकी पे,
बरखा आ गई ।।

आरती शर्मा
जबलपुर

सावन ऋतु

रिमझिम पानी बरस रहा है,
देखो मेरे मीत ।
सावन की ऋतु आई साजन,
सुन लो कजरी गीत।।

प्रेम रंग में तन-मन भीगा,
तुम हो मेरे पास ।
सारी बातें तुमसे करनी,
लगती हैं जो खास।।
तुम ही मेरे मन मोहन हो,
तुमसे लागी प्रीत।
सावन की ऋतु आई साजन,
सुन लो कजरी गीत।।

बहुत काल काटा बिरहा का ,
परदेसी थे नाथ।
घर आए हो अब तुम तो है,
हाथों में फिर हाथ ।।
साथ निभाना जीवन भर का,
यही प्रीत की रीत।
सावन की ऋतु आई साजन,
सुन लो कजरी गीत।।

अनुराधा गर्ग दीप्ति

सुनलो कजरी गीत

सावन आया बादल गरजे ,
सुन लो कजरी गीत ।
बिजली कड़के जियरा धड़के ,
सुन साजन संगीत ।।

रिमझिम - रिमझिम पड़े फुहारें,
मन मे उठे हिलोर ।
उमड़ - घुमड़ घूमें कजरारे ,
देख घटा घनघोर ।।
हिलमिल सखियाँ झूलो झूला ,
आओ प्यारे मीत ।
सावन आया बादल गरजे ,
सुन लो कजरी गीत ।।

मन्द - मंद सुरभित पुरवइया ,
मचा रही है शोर ।
मेघा काले जी डरवावें ,
चले न कोई जोर ।।
गिरी धरा पर चमकी बिजली ,
बहुत हुई भयभीत ।
सावन आया बादल गरजे ,
सुन लो कजरी गीत ।।

डॉ कुमकुम शुक्ला

मौसम बदल रहा

मौसम अब बदल रहा है ।
सावनअब बदल गया है । .
बारिश आती ठण्डक लाती ।
गरमी की हो गयी बिदाई ।
रिमझिम रिमझिम बरसे बादल ।
चारों ओर हरियाली छाई
कहाँ गया वो बचपन ।
भीगी सड़कों में
छप छप करते बच्चे ।
छत पर शोर मचाते नाचते गाते ।
मस्ती करत बच्चे ।
छोटी छोटी जलधारा में
कागज की नाव चलाते ।
इन्द्रधनुष अम्बर में दिखता ।
बागो मे झूले पर जाते ।
हरी चूड़ियां हारी साड़ी पहन
सखियों के संग सावन गीत गाते ।
सावन आज मी आया
बारिश आज भी आई ।
पर इस मात दौड़ की जिंदगी में
कुछ सकून के पल ढूढते ।
वाट्स एप फेसबुक में
साखियों के संग सावन मनाते ।
सेल्फी वीडियो लेकर
सावन के नजारे
मोबाईल में कैद कर लेते ।
मौसम अब बदल रहा है ।
सावन अब बदल गया है ।

रचना सक्सेना
जबलपुर मध्य प्रदेश

कजरी गीत

झूम -झूम के बादल आये,
सुनलो कजरी गीत।
याद सताती है साजन की ,
मनवा भाये प्रीत।।

वर्षा बिन हरियाली ऐसी,

कवितायेँ

ज्यों पानी बिन मीन।
सावन पावन तीज सुहागन,
मन होता रंगीन।।
सावन में मन झूमे साजन,
चलो निभायें प्रीत।
झूम -झूम के बादल आये,
सुनलो कजरी गीत।।

निर्मोही मोहन के रंग में,
नाचे मीरा गर्व।
हवा गुलाबी होती है जब ,
कजरी गाते सर्व।।
झूम रहे हैं देख बहारें , लगे सुहानी प्रीत ।
झूम झूम के बादल आये,
सुनलो कजरी गीत।।

टप-टप बूंदे सावन की है,
सुन लो कजरी गीत।
बदरा बरसे झूम -झूम कर,
धरा हो गयी शीत।।

धरती का है कण -कण सूखा,
बढ़े निरंतर आस।
अति व्याकुल पशु पक्षी धरती ,
देवा इंद्र उदास।।
घिर आये हैं मेघ रसीले,
धरती हुई पुनीत।
टप-टप बूंदे सावन की है,
सुनलो कजरी गीत।।

पेड़ो की शाखायें डोले ,
मनवा ले हिंडोल।
डाल डाल पर मनवा झूमे ,
हृदय मधुर कल्लोल।।
बादल बिजली एक रूप हो,
मिलना देहातीत।
टप -टप बूंदे सावन की है ,
सुनलो कजरी गीत।।

उमा मिश्रा प्रीति

शिव जी

आशुतोष जी अवघड़ दानी,
सृष्टि की आपदा हरते।
उमाकांत शिव शशिशेखर,
हृदय कृपा -करुणा भरते।
रुद्र महायोगी महादेव,
गरल कंठ में जो धरते।
जीव जगत के कल्याण हेतु!!

अनीता दुबे

कृष्ण

गीता एक विचार है ,
हर जीव साभार है।
जीवन का आभार है ,
वेदों को तो पढ़िए।

भगवदगीता मान ,
वृंदावन कृष्ण धाम,
गोकुल का अभिमान,
ग्रंथों को तो जानिए ।।

श्रीकृष्ण राधा आस है ,
पुराणों में विश्वास है ,
कृष्ण नाम चेतना है ,
दर्शन तो कीजिए।

राधा मीरा गोपी जान ,
जगत की पहचान,
राधा कृष्ण जपू नाम,
हरि को तो पूजिए।।

आशा जाकड़

दामिनी

दामिनी झांक रही है!
घूंघट हटाकर बादलों का!
चमकीली आभा से
उजियाला भर रही है!
छाई हुई काजल की
कोठारी सी कालिमा
घनघोर अंधियारा!
दादुर की ध्वनि,
झींगुर का गायन!
बादलों का वादन ,
नगाड़ा बजा बजाकर!
नर्तन का निमंत्रण देते!
पीहू पीहू करते मयूर!
पूरे पूरे पंख पसारे !
चातक भी पी लेता स्वाति ,
अमृत तृप्ति की आस लिए !
तड़ित दामिनी ,
शरमाई , सकुचाई
लज्जावती छुईमुई सी!
देखे अपनी मुख मुद्रा!
सागर की जल राशि में!
गर्वित हृदय उठते ज्वार
लपेटे अपने दामन में!
मधुर मिलन की
आस धरे हुए!
उतर गगन हिंडोले से!
तीव्रता शीघ्रता में
घर्षण करती
अटालिकाओं से!
वृक्षों का सहारा लिए!
उतरती धरा पर !
रिमझिम वर्षा की
बूंद के संग !
अंबर से मेदिनी
के संगम को!

डॉ साधना शुक्ला

बारिश रानी ख़ुशियाँ देती रहना

मेरा नन्हा-मुन्ना
बैठे-बैठे कुछ सोच रहा था
देख उसको यह हालत
पूछ ही बैठी मैं, क्या हुआ बेटा
क्या सोच रहे हो?
माँ समझ मेंनहीं आता,
कुछ भी समझ में नहीं आ रहा
आसमान से इतना पानी
नीचे कैसे गिरता है?
क्या भगवान के पास बड़ी-बड़ी बाल्टियाँ हैं?
वह तो पानी नीचे गिराता ही जा रहा है-
2,उडेल़ता ही जा रहा है ।
सुन उसकी बातें हँसते-हँसते
मैं बोल उठी ।
मेरे मुन्ने,भगवान हमारी देख-रेख करते हैं ।
तपती धरती की प्यास बुझाने
ऊपर से नीचे पानी गिराते जाते हैं
छुपे अंकुरों को अंकुरित करते जाते हैं ।
ईश्वर की मर्ज़ी है बेटा,
कहीं सूखा,कहीं बाढ़,कहीं हरीतिमा का
चँवर झुलाते जाते हैं
तुम परेशान हैरान न हो
जाओ बेटा देखो चुन्नी,मुन्नु,टुन्नु भी आगए।
जाओ जाकरअपनी-अपनी
काग़ज़ की नौका पानी में तैरा कर देखो ना
बारिश रानी इन बच्चों को ख़ुशियाँ देती
रहना-2
देखोउधर नन्हीं रानी ,चुन्नी,मुन्नी,बिन्नी
सभी ताली बजा-2 कर पानी में नाच रहीं हैं
कितना मज़ा आ रहा है बेटा!
दादा-दादी भी बाहर बैठे,
आती जाती बूँदों का लुत्फ़
उठा रहे हैं ।
देखो बेटा दीदी भाभी भी बारिश के पानी को
एक दूसरे केसरकुंज फैंक फैंक कर ख़ुशियाँ
मना रहे हैं
आजा वर्षा रानी आजा
जल्दी-2 आती रहना
सूखे खेतों को हरियाली दे करअन्न
उगाना,फल उगाना,
कृषकों के सूखे चेहरों पर
ख़ुशियाँ देते रहना ।।

पुष्प लता भटनागर

पदांत दो गुरु

नैन झुके मुख बोल न पाए,
पिया मिलन की आस जगाए।
पग की झाँझर जब-जब छनके,
बिन बोले सब कुछ कह जाए।।

चूड़ी की खन-खन है प्यारी,
साजन करते बातें सारी।
डोल रहा है मनवा मेरा,
देख उन्हें मैं सब कुछ हारी।।
भरे हुए कुछ भाव हृदय के,
सोच रही कुछ तो कह पाए।
पग की झाँझर जब-जब छनके,
बिन बोले सब कुछ कह जाए।।

गिरती उठती पलकें मेरी,
कुछ सुनती कुछ कहना चाहे।
मिला पिया का प्रेम निराला,
दूर हुई जीवन की आहें।।
नैनो का कजरा है तीखा,
झुमका झूम देख इतराए
पग की झाँझर जब-जब छनके,
बिन बोले सब कुछ कह जाए।।

धीरे से हाथों को छूना,
संग स्वप्न कुछ मिल कर बुनना।
नव पथ चलना है दोनों को,
प्रेम भरा जीवन रस गुनना।
कर सोलह श्रृंगार गुजरिया,
रूप सजा खुद ही शरमाए ।
पग की झाँझर जब-जब छनके,
बिन बोले सब कुछ कह जाए।।

निशा अतुल्य

आयी बरसात

आयी बरसात, लायी ख़ुशियों की सौग़ात
शीतल फुहार, जगाए दिलों में जज़्बात

दूर गगन में जब देखे, मेघमालाएं छायी हैं
बिरहन को अपने प्रियतम की याद सतायी है

देखे बदरा और ख़ुशी से नाच रहे हैं मोर
झींगुर की झंकार के संग दादुर का शोर

पल्लवों की, कैसी हुई है रंगत हरी-हरी
साजन हैं परदेस, सजनी की आँखें भरी-भरी

खेतों में चल रहे हल, सुहानी है हलचल
लोग गाएँ जब गीत, ये दिल जाए मचल-
मचल

कृषक बालाएं, झूम झूम नृत्य कर रही हैं
धेनू और भैंसे, खेतों में भरपेट चर रही हैं

शहरी लोग तो भीगने से भी कतराया करते
पर्स व मोबाइल की चिंता में व्यर्थ डरा करते

बच्चे होते प्रसन्न देखकर आयी बरसात
मस्ती में मिलजुल खेलते ले हाथों में हाथ

चाय पकौड़ों संग वर्षा का लुत्फ़ उठाओ
मेघ, मल्हार और वर्षा के नग़मे गाओ

'नीलोफ़र'

हे हंस वाहिनी मां

हे हंस वाहिनी मां तुम्हारा
स्वरूप स्नेह का सागर है
भर देती हो ज्ञान उसमें
जिसकी खाली गागर है !

जो तुम हो तो इस धरा पर
बह रही संगीत की बयार है
तुम्हारे दिए विवेक और
ज्ञान से चल रहा ये संसार है !

जो तुम हो तो कोरे कागजों की
बदल रही जिंदगानी है
तेरे आशीर्वाद से लिख जाता
हर कोई अपनी कहानी है !

जो तुम हो तो जिंदगी में
रस है इंसानो में जीने की ललक है
कैसे कहुँ मुझे मेरे चारों और
बस दिखती तेरी ही झलक है !

हे माँ जो तुम हो तो बागों में
भवरें गुनगुनाते है गीत गाते है
सावन में झूलों पर नार
नवेलियों की गीत मन जीत जाते है !

जो तुम हो तो सदियों से
सीख देते हमारे वेद पुराण है
साधु संतो की मीठी और
सच्ची वाणी हमारे प्राण है !

कोशिश यही अपने मन के
मैल को अच्छे कर्मों से धोती रहूं
अपना लेना शब्दों के मोती को
जो तेरी माला में पिरौती रहूं !

सीमा सिंघी
गोलाघाट असम

आत्मबल

अगर तुम मायूस हो, उदास हो
अपने जीवन से निराश हो ,हताश हो
तो जीवन तुम्हारा निरर्थक है
तुम जीते जी मृतक समान हो ।
अपने जीवन को कभी अंधेरे में
गुम मत होने दो
नाकामयाबी के दलदल में
कभी खुद को धंसने मत दो
अपने जीवन को सार्थक बनाओ
अपनी मुश्किलों को
मुस्कुरा कर सुलझाओ ।
प्रकाश की ओर अग्रसर रहो
अपनी अंतर्मन को
सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण करो
विफल जीवन को सफल बनाओ
अपने आत्मविश्वास को दृढ़ बनाओ
प्रथम ईश्वर पर आस्था....
द्वितीय आत्मबल से वास्ता....
तृतीय सफलता की ओर
निर्माण होता नूतन रास्ता...

पूनम अग्रवाल
गोलाघाट (असम)

ढलती शाम

जीवन जीने का नाम ,
सुबह हो या ढलती शाम।
चलते रहना कभी न रुकना ,
जीवन में पाओगे मुकाम।

जीवन जीने का नाम
सुबह हो या ढलती शाम...

सुख दुख आते हैं जीवन में,
देते जाते हैं यह पैगाम....
समय बदलता रहता है ,
परिवर्तन है प्रकृति का काम।

जीवन जीने का नाम
सुबह हो या ढ़लती शाम..

अभी धूप तो कभी छांव है,
जीवन है एक ढ़लती शाम।
खुशियां और गम का गहरा नाता,
जो दीपक संग बाती का नाम..।

जीवन जीने का नाम,
सुबह हो या ढलती शाम...

आए हैं सो जाएंगे जग से,
यह है जीवन का सांचा पैगाम।
प्रभु का भजन तू करले बंदे,
न जाने कब आ जाए ,जीवन की शाम।

जीवन जीने का नाम,
सुबह हो या ढलती शाम..।

रंजना बिनानी काव्या
गोलाघाट असम

नेत्रदान

सदा ज्योति का मान करें,
करके अपने नेत्रदान।
अँधे को ज्योति मिलें,
जब प्राण पहुँचे शमशान।

जलकर खाक हो जाएंगे,
कर दे नेत्रों का दान।
जीवन में खुशियों भरते जा,
जब करें जग से प्रस्थान।।

दानपात्र में दो नयन धरे,
करले कर्म महान।
देही अग्नि भष्म करें,
आँखें देखे जहान।।

अंधे को आँखें मिली,
खुशी मिली परिवार।
मर कर भी जिंदा रहें,
नजि साँई के दरबार।।

दान पात्र में धर नयन दो,
करलो कर्म महान,
इसके समान कोई धर्म नहीं,
नेत्रदान ही है महादान।।

सरला बजाज
गोलाघाट असम

चालान

थी सहेली की पार्टी
पार्टी थी बस कुछ ही दूर
घर पर बन सवंर कर
लग रहे थे हम भी हूर
बाल खोलकर मेरे
चेहरे पर आ गया था
कुछ ज्यादा ही नूर
फिर स्कूटी उठाई चल दिए
और हेलमेट पहनना नहीं समझा जरूर
बीच रास्ते चौराहे पर
सिग्नल हुआ था लाल
हमने बिना देखे सिग्नल
कर दिया उसको पार
अपने बंन संवरने के चक्कर में
होश रहा नहीं था कुछ खास
हवा हमारी तब निकल गई
जब सीटी बजाते दारोगा जी
आए स्कूटी के पास
कहां चली पापा की परी
क्यों तोड़ा सिग्नल तुमने लाल
ना पहना हेलमेट तुमने
अब तुम ही बता दो
कितने का काटूं तेरा चालान
डरी - डरी मैं सहमी - सहमी
कर दो दरोगा जी माफ
दोबारा गलती ना करूं
करती हूं मैं पश्चाताप
गलती माफी लायक है नहीं
कैसे कर दूं तुझको माफ
बिना हेलमेट के सिग्नल तोड़ा
कैसे दिख गया तुझको रस्ता साफ
काटा चालान दरोगा जी ने
और तगड़ी मारी डांट
अब मैं भी खाती हूं कसम
ये सबको मैं बताऊंगी
अब कभी बाल खोलकर
स्कूटी नहीं चलाऊंगी
कहीं भी जाऊं चाहे मैं
हेलमेट जरूर लगाऊंगी
जो दिखा कभी चौराहे पर सिग्नल
सबसे पहले ब्रेक मैं लगाऊंगी
और सभी सेफ्टी नियमों का
जो पालन मैं कर पाऊंगी
तो पापा की पारी खेबड़ी नहीं कहलाऊंगी।

रीना प्रदीप कुमार

परिंदा

परिंदा उड़ा अपनी उड़ान को,
छूने सपनों के आसमान को,
दुनिया की भीड़ में
बनाने चला अपनी पहचान को ,
परिंदा उड़ा नए सफर
नई मंजिल की तलाश को ,
कोमल मन को मजबूत करना होगा,
दुनिया की कसौटी पर खरा उतरना होगा ,
गलती की जगह ना होगी,
मजबूत हौसलों से आगे बढ़ना होगा ,
परिंदा उड़ा अपनी उड़ान को
छूने अपने सपनों के आसमान को।।

अंजलि चौरसिया

किताबें

किताबें करती हैं बातें
नए-पुराने जमाने की,
दुख-दर्द भुलाने की
सबको राह दिखाने की।

कुछ किताबें होती हैं हल्की
और कुछ होती हैं भारी,
लेकिन इसे पढ़ने वाले को
होती है हर चीज की जानकारी।

मुश्किलों में सिखाती हैं लड़ना
दुख में कराए यह मनोरंजन,
छोटे बड़े सभी प्राणी की
समाहित है इसमें गुंजन।

किताबों को जो मित्र बनाए
निरंतर ही वह बढ़ता जाए,
जीवन के हर एक डगर में
सुख शांति की अनुभूति पाए।

अंजली चतुर्वेदी

ग़ज़ल

शौक जबसे है पाला तुम्हारे लिए।
इक जगह दिल उछाला तुम्हारे लिए।
दिल में जबसे बनाई जगह ऐ सनम,
मैने घर बेच डाला तुम्हारे लिए।
सारी दौलत लुटी प्यार की राह में,
पी लिया विष का प्याला तुम्हारे लिए।
राह में इस क़दर खा रहा ठोकरें,
गिरके खुद को संभाला तुम्हारे लिए।
खुद के हिस्से बचा है अँधेरा प्रिये,
रख लिया है उजाला तुम्हारे लिए।

सैयदा अनूवारा खातून

ग़ज़ल

बतलाएं तुम्हें क्या के यहाँ क्या नहीं होता।
किस रोज़ यहाँ कोई तमाशा नहीं होता।।
शिकवा जो किया मैंने तो शोर उड्डा जहाँ में।
वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नही होता
दुख दर्द दिए तूने वो सब सह लिये मैंने।
दुख दर्द के मारो का सहारा नही होता।।
कुछ खेल अलग चलता है इस पर्दे के पीछे।
हम जैसा समझते हैं वो वैसा नहीं होता।।
ज़ीनत है चमन की
यहाँ बस उनके सबब से।
हैं ऐसे शजर जिनका के साया नहीं होता।।
ग़ैरों की शिकायत से भला फ़ाएदा क्या है।
आ जाए बुरा वक़्त तो बेटा नहीं होता।।
बनता है कोई काम
बिगड़ ता है कोई काम।।
होता है 'अज़ीज़' ऐसा तो वैसा नहीं होता।
भरी बारिश में आकर इस घर को देखना ,
बारिश की बूँदें इस फूस की
झोपड़ी में टपकती ,
आज घर में चूल्हा भी न जल सका ,
घर के सामने पानी ही पानी ,
और रूंधे गले को पीने का
साफ पानी भी नहीं ,
पर खाली पेट मासूम की
निगाहों में शिकस्त नहीं।
जीने की ललक को जिन्दा रख ,
सपनों की खनक से उदासी ,
दूर करने का इंतजार है इसे ,
कुछ देर यूं ही बादल बरसेंगे सावन झूमेगें
और ये मस्त निगाहें लालसाओं से दूर,
जिसके भोलेपन में
मस्त आनंद की सनक है ।
और तभी बादलों को उड़ता देख
स्वप्न पूरे करने का विश्वास ,
मन में लिए चलना होगा
तभी गम रूपी धूप निकल ,
उसके सिर को छोड़ पांव तक आएगी
और तभी चेहरे पर सच्ची खुशियों की ,
लहर छायेगी , लहर छायेगी ।।

सरिता कपूर
गाजियाबाद

बात जब आबरू की हुई

तो अदब से नजरें झुका ली हमने
मगर बात जब हौसले की हुई
तो अपनों की हिफाजत में
तलवार भी उठा ली हमने !!

महिला काव्य गोष्ठी
विशेषांक

कवितायेँ

बात जब अहमियत की होने लगी
तो सबसे पीछे जाकर खडे हो गए
पर बात जब जिम्मेदारी की हुई
तो माँ बनकर हर फर्ज निभाई हमने !!
बात जब ख्वाहिशों की होने लगी
तो मानों मेरी चाहत गहरी नींद में सो गई हो
मगर बात जब बच्चों की खुशी की आई
तो सबसे लड़ कर , मर्यादा में रहकर
उसको - उसका हक दिलाया हमनें ....

अर्चना झा अन्नू

श्रावण मास

आषाढ़ सावन की सीली सी सुबहें
मीठी हलचल सी मचा जाती हैं।
ज़िन्दगी जीने का एक नया संदेशा,
देती जाती हैं।
आमों की खुशबू कोयल की कूक,
कानों में रस यूं घोलें,
जैसे नवविवाहिता प्रकृति,
चलती हो हौले हौले।
चारों ओर मेघों का जमघट,
गरज गरज कर शोर करे,
कभी बरसते कभी धमकते,
आतप को यूं दूर करें।
वृक्षों की शाखें धुली धुली,
पत्तों पर हरियाली छाई,
सावन में देखो कैसी,
मदमस्त घटा छाई।
श्रावण मास भी है ये बड़ा निराला,
भीगे रहते इसमें हरदम,
मन्दिर और शिवाला।
कभी झांकता सूरज धरती को,
बादलों की ओट से
जैसे करता कोई शरारत,
मन में रखकर खोट वो।
पहली बारिश की बूंदें,
रिमझिम तान सुनायें ,,
पीपल नीचे बैठे भोले,
सावन गीत सुनायें।
घर -घर पड़ गये झूले,
बचपन याद दिलायें।
कांवड़ लेकर भोले चलते,
शिव -भक्तों के टोले चलते,
छाया रखना सब पर प्रभु,
यही अरज हमारी,
यही अरज हमारी।

मंजु गुप्ता,
बिजनौर।

वर्षा ऋतु

मनभावन सावन लगा, घिरी घटा घनघोर।
दादुर, कोयल ,बोलते, नाच रहा मनमोर ।।

सावन की रिमझिम सुखद, बहती सुखद बयार।
मन मतवाला झूमता, गाता मेघ मल्हार।।

बरसा पानी टूट कर ,बुझी धरा की प्यास।
चातक भी तो कर रहा , स्वाति बूंद की आस।।

सावन के संग आ गए, कितने तीज त्यौहार।
राखी पूनम धागों का, भाई बहन का प्यार।

राधा के संग झूलते, झूला कृष्ण मुरार।
गोपी कान्हा ढूंढती, शीतल पड़ें फुहार।

सावन में कांवड़ चले, होती जय जयकार।
शिव शंभु का नाम जपो , होगा बेड़ा पार।।

सावन में बिरहन जले, करे पपीहा टेर।
पी ,ना मुड़े काहे सखि , हो ना जाए देर।।

प्रो पूनम चौहान
धामपुर बिजनौर

सावन के दिन आय

'आये री सखि सावन के दिन हैं आये --आये--आये री,
घर घर पड़ गए रेशम के झूले सखि रेशम के झूले-।
-आये---
मोर पपीहरा गाये रहे क्षकजरी री --गाय रही कजरी,
सुनत ही कजरी हुलसत है अंग अंग री -- सब गाय रहे कजरी।
आये री सखि--
हरी हरी क्ष्चूड़ियाँ सब सखियन ने पहनी सब सखियन ने पहनी,
मन में उठत है हिलोर सखि री
मेरे मनुवा में उठत हिलोर।
सबके बलम तो इस मौसम में
आये मेरी ना होवत सुभोर,
कारे कारे मेघा अंबर में छाय रहे
बूँदे मचाय रही शोर सखि री--।
हरा भरा मौसम मन में भी हरियाली और
मेंहदी ली हरी हरी रचाय,
लाल रंग या हिना ने छोड़ा जो प्रियतम के मन रही भाय-- सखि री प्रीतम के मन रही भाय।
बैरी बलम जो गये थे विदेसवा अबहुँ लौट के आय,
मैं तो रची बसी तन-मन में साजना के मन मेरो झूलत जाय-- सखि री मन मेरो झूलत जाय।।
आये री सखि सावन के दिन हैं आये--'
झांझर झनक उठी पैरों में और कंगना हाथों में,
बिंदिया चमकी माथेपर और नथनी भी नाच उठी।
आये री सखि सीवन के दिन आये--
गजरा केशों में गमक उठा सावन का महीना महक उठा
आये री सखि सावन के दिन आये।
आभा की यही कामना है जीवन में सबके प्यार रहे,
सबके सोलह सिंगार रहें संग साजन की मनुहार रहे।
आये री सखि सावन के दिन आये।।

डॉ आभा माहेश्वरी
अलीगढ

सावन

आषाढ़ से ही छाने लगती थी सावन की मस्ती,
सावन में भी बादल, अब बरसते नहीं हैं।
होड़ होती थी सावन में गीत गाने के लिए,
ढोलक आती नहीं , गीत अब गवते नहीं हैं।
बीकानेरी घेवर ऑनलाइन डिलीवर होता है,
फेनी पगती नहीं घर में पूड़े अब पकते नहीं हैं।
कमरे ही रहने को बन जाए तो बहुत है,
घर में आँगन नहीं ,अब झूले पड़ते नहीं है।
हो गया है अब रास्तों का विस्तारीकरण,
पेड़ सड़कों के किनारे अब लगते नहीं हैं।
कैलेंडर के पन्ने पलटने से ही पता चलता है,
वरना सावन के नजारे तो अब दिखते नहीं हैं।

ऋतुबाला रस्तोगी

वंशा

श्याम तुम वंशी बजाओ,
मैं तुम्हारी रागिनी हूँ।
मैं नहीं राधा हूँ मोहन!
तुम जिसे अपना न पाए।
मैं तेरी दीवानी मीरा
जग जिसे न भूल पाए।
तुमसे बजती साँस की धुन
देह से अनुगामिनी हूँ।
श्याम तुम- - - -
पुष्प में मैं रंग मोहन
तुम सुगन्धि बन बसे हो।
तितलियों सी भागती मैं
तुम मधुर मधु से रचे हो।
फूल बन कर खिल उठो, मैं
शूल सी सहभागिनी हूँ।
श्याम तुम- - -
बाँस की तेरी बंसुरिया,
कैसे अधरों पर सजी है।
पोर का स्पर्श पा जो
एक ही पल में बजी है।
यह सुखी,सौभाग्यशाली
मैं नहीं बड़भागिनी हूँ।
श्याम तुम- - -
मैं युगों से तृषित हूँ,तुम
श्याम-गहन बन बरस जाओ।
जग है विरही राह ताके,
बस ज़रा सा तरस खाओ।
तुम बनो रसधार मोहन!
मैं तड़पती दामिनी हूँ।
श्याम- - -

डॉ सुषमा त्रिपाठी

जब नाथ का नाम दयानिधि हैं

जब नाथ का नाम दयानिधि हैं,
तो दया भी करेंगे कभी न कभी।
जब तारनहार कहावत है, भव पर करेंगे कभी न कभी।
हम पापों के करने वाले हैं, प्रभू पापों के हरने वाले है।
जब पाप अधिक बढ़ जायेंगे,
प्रभू नाश करेंगे कभी न कभी।
प्रभू दुःख विनाशक सुख दाता, सब संकट हरने वाले है।
जब देव दयालू कृपा निधि है,
तो कृपा भी करेंगे कभी न कभी।

सुनीता गुप्ता ' सरिता '

बहुरानियाँ

लहरों में नाव सी ये, निम्बिया की छांव सी ये।
हरे भरे गांव सी ये ,होती बहुरानियां।

सरदी की धूप सी ये,ममता स्वरूप सी ये।
प्रेम वाले मोती नित, बोती बहुरानियाँ।

भोर को प्रणाम करे,सारा दिन काम करे।
सबको सुलाके फिर,सोती बहुरानियाँ।।

कुल को बढ़ाती हैं ये,सब अपनाती हैं ये।
फिर भी न जाने क्यूं ये, रोती बहुरानियाँ।।

घर पे जो आंच आए,गम के जो घन छाए।
बन बिजली सी कौंध , जाती बहुरानियाँ ।।

खुद को भुला के जीती, आंसू भी सहज पीती।
सभी को खिलाने बाद,खाती बहुरानियाँ।।

पीहर को छोड़ कर, नए नाते जोड़ कर।
प्रीत का खजाना संग ,लाती बहुरानियाँ।।

द्वार की रंगोली सी है,रंगों भरी होली सी है।
इसी लिए सब को ही, भाती बहुरानियाँ।।

शिप्रा सिंह

गीत

अक्षरों की सरगम से माला पिरोती ,
शब्दों को बुनकर गीत संजोती ।
इसी से सभी के दिलों को छूती ,
खुशी के लिए गीत गुनगुनाती ।
होती है गीतों के ज्ञान में बड़ी गहराई ,
सात सुरों में बंधा है भावों की गहराई ।
कई प्रहर में गीतों का अपना अंदाज ,
ख्यालों से होता रहता आगाज़ ।
हर लय और ताल में बुनता है स्वर ,
कई रागों में गाया जाता है गुर ।
द्रुत , मध्यम ,तीव्र गति में पिरोया जाता है गीत ,
हृदय को स्पर्श करता हुआ गाया जाता है गीत ।
गीत के होते हैं कई प्रकार ,
ग़ज़ल,ठुमरी, फिल्मी,लोक गीत आदि स्वर ।
हैं गुरु पारंगत सिखाने के लिए ,
छोटी बारीकियों को समझाने के लिए ।
गायन से होती अपने क्षेत्र की पहचान ,
जिसमें छुपा है पुरातन ज्ञान ।
गीतों को सुनने से गम हैं भुलाते ,
इसको गुनगुनाने से मुस्कान लाते ।
कहे ङ्योगिताङ गीत ऐसे गुनगुनाओ ,
भेद भाव भूलकर सबको गले लगाओ ।

डा.योगिता सिंह 'हंसा'

गुरू होते शिल्पकार

गुरु ही होते शिल्पकार,
वो ही आकार देते हैं।
कच्ची मिट्टी तपाकर के,
सारे विकार मिटाते हैं।।
गुरु सभी के जीवन में सदा,
पथ दिखाने वाले होते हैं।
संघर्षो से लड़ना सिखाए,
तभी तो गुरू कहलाते हैं।।
गुरु अज्ञानता के अंधेरे में,
ज्ञान की ज्योति जलाते हैं।
हौंसला देकर बढ़ाये पथ में,
सद्मार्ग पे चलना सिखाते हैं।।
गुरु ही कुम्हार बन कर,
हमको एक आकार देते हैं।
गुरु ही होते सभी के शिक्षक,
हमको ज्ञान अपार देते हैं।।

सुषमा सिंह 'उर्मि'

तक़दीर बगावत कर बैठा

जब हँसी छिनी तो मौन रही,
अब पीर बगावत कर बैठी।
क्या करूं आज मुझसे
मेरी तक़दीर बगावत कर बैठी।
चिंता की धूप बढ़ी मैंने उर के
बरगद की दी छाया।
आँखों मे चित्र उतार लिया ,
कब धीरज मेरा अकुलाया।
तिल तिल कर कंचन सी काया,
गल गयी मगर अन्तर न हिला।
ढलते सूरज को किया नमन,
दुःख से जीवन का सुख पाया।
मैं बनी नियति की तरफदार,
तकदीर बगावत कर बैठी।
क्या करूं आज मुझसे
मेरी तकदीर बगावत कर बैठी।
खुशियो का बिखरा जब गुलाब,
कांटों को जीवन मान लिया।
आंसू आए पी गयी
उन्हें गंगाजल सा सम्मान दिया।
रूठी रजनीगंधा,
मैंने आँखों की नींद कुचल डाली।
मैं टूट गयी पर झुकी नहीं ,
जो मिला हलाहल पान किया।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धम्तरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- **तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-**

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

कवितायेँ

मैं म्यान बनी जिसकी वो ही,
शमशीर बगावत कर बैठी।
क्या करूं आज मुझसे
मेरी तकदीर बगावत कर बैठी।
जिन केशों को दुलराया था ,
वे नाग फ़ाश से लगते है।
जिनको मन का चंदन बांटा ,
वे आज मुझे ही डसते हैं।
शूलों को तो मैंने अपने ,
उपवन का माली नियत किया।
मेरे बिखरे जीवन पर अब
वे ही ताने कसते हैं।
देखो तो मुझसे मेरी ही ,
तटवीर बगावत कर बैठी।
क्या करूं आज मुझसे
मेरी तकदीर बगावत कर बैठी।
जब सब कुछ लूटा दिया मैंने,
अपना कहने को कुछ न रहा।
उभरा होंठों पर दर्द मगर ,
संयमित रहीं कुछ भी न कहा।
पीड़ा की हाला प्याले मे ,
मैं डाल डाल कर पीती रहीं ,
उतरा विषाद की सरिता मे
कुछ इधर गिरा कुछ उधर गिरा।
लेकिन फिर भी तो लहरों की
जंजीर बगावत कर बैठी।
क्या करूं आज मुझसे
मेरी तकदीर बगावत कर बैठी।

पूनम पांडेय

गुरु की महिमा

गुरु की महिमा का क्या वर्णन उनकी तो महिमा अपरंपार,
गुरु आशीर्वाद मिल जाए तो,
शिष्य के जीवन का बदल जाता है सार,
गुरु आपकी वाणी है अमृत,
मिल जाए आपकी कृपा दृष्टि तो,
शिष्य के पूरे जीवन का हो जाता है उद्धार त
बिना गुरु के जीवन का, ना कोई उद्देश्य ना कोई सार,
अपने ज्ञान से वह भर देते हैं,
शिष्य के जीवन में उत्तम गुणों का संवार त
अज्ञानता के अंधकार से निकालकर हम पर करो यह उपकार,
हे गुरुदेव इस भवसागर में डूबे हम,
आप ही हमारे नैया और आप ही हमारी पतवार ।

पुष्पा सिंह

गुरु

मां होती है प्रथम गुरू,
जीवन का पाठ पढ़ाती है।
ठोकर लगके गर गिर जाएं,
तो उठना हमें सिखाती है।

जीवन की इस पाठशाला मे,
कैसे जीना है,पिता ने सिखलाया।
हो कठिन डगर, मुश्किल का सफर,
हिम्मत से बढ़ना है बतलाया।

जीवन को उद्देश्य मिला है फिर
जब साथ गुरू का पाया है
सफलता की ओर अग्रसर हुई
और आशीष गुरू का पाया है।

है धन्य हुआ जीवन मेरा,
जीवन में गुरु को पाकर के ।
जीवन सफल हुआ मेरा,
गुरु की शरण में आ कर के।।

श्रद्धा श्रीवास्तव

चमके भाग्य सितारे

शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे।
बुद्धि कोष विकसित होते हैं,साधक के पौबारे ।।
मिला लेखनी को बल बूता,वर्ण शब्द सध जाते।
तत्सम तद्भव समास जाना,अलंकार इतराते ।।
सजी वर्णिका अब भावों में,सुन्दर सृजन सँवारे ।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे।।
सीख शब्द संयोजन हमने, छंदों को रच डाला ।
बने मापनी के अनुगामी,सृजित गीत की माला ।।
जान गए जब बारीकी को, लेखन खूब़ निखारे ।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे ।।
भिन्न नियम हों भिन्न विधाएँ ,सहज सर्जना होती।
मातु शारदे प्रेरक बल से ,बीज भाव के बोती ।।
कालजयी रचनायें होतीं,सर्जक स्वर्ग सिधारे।
शुभाशीष गुरु जी का पाकर,चमके भाग्य सितारे ।।

सीमा वर्णिका

पटल को नमन मेरे सपनों का भारत

हम सबको भारत को आज फिर से सजाना
हैं जाति धर्म का भेद भूलाकर वसुधैव कुटुंबकम को दिखाना है
भ्रष्टाचार अत्याचार बेरोजगारी महंगाई इन सब पर काबू पाना है पूंजीपति शोषणकारी पर वार हमें मिल कर करना है
संकुचित विचारधारा की बेडियो को तोड़कर स्वच्छंद उन्मुक्त नीले गगन में उड़ना है
शुद्ध हवा जल अन्न मिले सभी को मुख पर खुशहाली हो पूजनीय नारी की सुरक्षा सबकी जिम्मेदारी हो
नैतिक मूल्य और संस्कार को हमें बचाना है
गुरु चाणक्य और शिष्य चंद्रगुप्त सा बनना है
त्याग सहयोग परोपकार संस्कार जैसे गुणों को पाना है सप्तरंगी पुष्प लताओं से श्रृंगार हमें करना है
विज्ञान अध्यात्म समन्वय और प्रकृति की पूजा हमें हमी को करना गुरु परंपरा और गीता गायत्री गंगा को बचाना है
हम सबको मिलकर भारत को विश्व गुरु बनाना है व्याप्त सभी कुरीतियों को मिलकर दूर भगाना है

ऋजु पाण्डेय
प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

महादेवी निराला बच्चन की,

कविताओ का सुंदर उद्गम,
गंगा यमुना और सरस्वती का,
जग विख्यात जहां संगम।
है ऋषियों की यह तपोभूमि ,
यहां यज्ञ विधा का हुआ निर्गम,
हरि चरणों के आश्रित होकर ,
है खड़ा अक्षय वट अति दुर्गम।
है तीर्थों का राजा प्रयाग ,
जहां कलकल ध्वनियों का सरगम,
पटरानी हैं जो सप्तपुरी ,
उनका ये राजा है अनुपम।
ब्रह्मा की पड़ी पहली आहुति ,
जिसके अधिष्ठाता विष्णु स्वयं,
जहां माघ मास में प्रति संवत ,
संतो का होता है सत्संग,
है तीर्थो का राजा प्रयाग,
जहां कलकल ध्वनियों का सरगम।

अनामिका तिवारी' अन्नपूर्णा'

बीती एक सदी सी हूं मैं

छायायें ही मिलने आती,बीती एक सदी सी हूं मैं,
लहरें छूके पवन गया है, ठहरी एक नदी सी हूं मैं ।।
बीती ऋतुएं बुला रही हूं ,अनगिन शूलें उठा रही हूं,
सजल नयन से लिखती पाती, पगली एक खुशी सी हूं मैं।।
जलधर ,सौरभ,और अनिल को ,कौन बांध के रख पाया,
दौड़ रही छाया के पीछे, दो खंडों में बटी सी हूं मैं ।।
नयनों में प्रिय बसने आओ, सुंदर एक सपन बन जाओ,
मेरी रातें भोर बना दो ,सदियों से ही जगी सी हूं मैं ।।
जब से नयन में झांका तेरे ,मन में हलचल मची हुई है,
लहरों सी लहराती चाहें, कूल तुम्हारे लगी सी हूं मैं ।।
मृदु अधरों के हास लजीले ,लतिका पात हुए सब पीले,
ओ यायावर कब आओगे, हे घनश्याम! बुझी सी हूं मैं ।।
क्षरित हो रहा है यह पुदगल ,सत्य सखा का दर्शन किस पल
पांव बिवाई बता रही है अनत काल से चली सी हूं मैं ।।
नयनों में कुछ स्वप्न सजाकर चलते जाते पथिक निरंतर ,
सूखी दुर्वा बोल रही है ,पगडंडी इक थकी सी हूं मैं।।
तिमिर घना पतवार नही है, दुर्गम सागर,विकट आंधियां,
जल हिलोर में डगमग होती,नैया एक फंसी सी हूं मैं ।।

गीता सिंह 'शंभुसुता'

ग़ज़ल

किया था क्या कुसूर बताया तो होता
नाराज़गी दिखा हक़ जताया तो होता ।।
खामोश रह कर सहते रहे हर पल
बयां करके इक़ बार सताया तो होता ।।
हमदम इतने खास़ ही थे जब हम
धड़कनों में कुछ क्षण बसाया तो होता ।।
हम लिखकर जीते रहे तुम्हें ग़ज़लों में
लबों पे हमें लाकर गुनगुनाया तो होता ।।
अपने होकर भी बेगानापन दिखाते रहे
दिल से मानकर'विशाल'अपनाया तो होता ।।
तल्खियाँ दिखा कर सताते रहे उम्र भर
इक़ बार बारीकियों से इश्क़ सिखाया तो होता ।।
नज़दीक न सही दूर ही सही एक पल के लिए
हमें देख कर मन से मुस्कुराया तो होता ।।

अवंतिका विशाल'अवि'

ग़ज़ल

ऊँची कभी नीची सी उल्फ़त की डगर होगी
अब ज़ीस्त हमारी ये ऐसे ही बसर होगी
होंठों पे हँसी होगी ग़म दूर मेरे होंगें
उम्मीद पे जिंदा हूँ जल्दी ही सहर होगी
घबराना न ए दिल तू तारीकियों से अपनी
हल होगी हरिक मुश्किल जब रब की नज़र होगी
नफ़रत की हवा फैली तूफ़ान बनेगी ही
उजड़ेगा हरिक गुलशन आँधी ये जिधर होगी
आँखों में छिपाई है उल्फ़त जो तुम्हीं से है
इस बात की तुमको क्या कोई भी ख़बर होगी
हर खार नदारद हो बस फूल खिलें हरदम
किस्मत में कोई ऐसी दुनिया ए बशर होगी
ये पाक सा रिश्ता 'अनु' टूटे न हमारा अब
माँगी है दुआ रब से लम्बी ही उमर होगी

अनीता सिंह 'अनु'

लोग यूँ कहते हैं कि

लोग यूँ कहते हैं कि
हर लम्हे को जिया करो
बात-बात हर बात पर
यूँ तस्वीरें न लिया करो
लेकिन ये तस्वीरें ही तो
बीते दिन याद दिलाती है
गुजरी-बीती सारी यादें
तस्वीरो में झिलमिलाती हैं
तस्वीर देख हम बच्चों की
कितने सपने संजोते हैं
जो विदा हो गए दुनिया से
तस्वीर देख कर रोते हैं
पल-पल बीते जो जीवन के
वे लौट कहाँ फिर आते हैं
तस्वीर देख बीते दिन की
हम यादो में खो जाते हैं
जो कुछ भी लब ये
कह न सके
वो तस्वीरें कह जाती हैं
हँसती तस्वीर रुलाती हैं
रोती तस्वीर हँसाती है
ये तस्वीरें हैं जिन में हम
सुख-दुःख सारे पा जाते हैं
जैसे जीवन के वो कुछ पल
हम फिर से कुछ जी पाते हैं

डॉ. शिवानी चंद्रा

रुठ न जाना साथी मुझसे

रुठ न जाना साथी मुझसे, तुमको ही सब कुछ माना
रोम -रोम में तुम ही बसे हो,जब से तुम को है जाना
प्यार की बातें नहीं आती थी ,तुमने ही सिखलाई है
जो है चेहरे पर रौनक, वह भी तुमने लाई है
सपने मेरे सुंदर सजे है ,लक्ष्य नहीं तुमको पाना
रोम-रोम में तुम ही बसे हो, जब से तुमको है जाना
मर्यादा की बातें करके ,तुमने दिल में जगह पायी
प्रेम तो मेरा मीरा जैसे, मैंने भी तो सजा पायी
विश्वास अभी भी पूरा मेरा, पर तुमको नहीं है पाना
रोम-रोम में तुम ही बसे हो ,जब से तुमको है जाना
दिल में थोड़ा जगा मुझे दो ,गर एहसास अभी बाकी
जादा कुछ नहीं चाहिए मुझको, दिल में नाम मेरा राखी
कभी न तुमसे कोई शिकवा ,थोड़ा तुम भी झुक जाना
रोम-रोम में तुम ही बसे हो ,जब से तुमको है जाना
जीवन में बाधा न बनूंगी, वादा तुमसे करती हूं
बुरे लगे जो मेरे आंसू, अपनी अंदर भरती हूं
आंच न तुम पर आने दूंगी, तुम को ही सब कुछ माना
रोम -रोम में तुम ही बसे हो,जब से तुमको है जाना

डॉ ममता जोशी स्नेहा
देव भूमि उत्तराखंड

चूनर ओढ़ी थी सतरंगी

चूनर ओढ़ी थी सतरंगी
जीवन पंथ सजाने को
दिल में गीत उमंगों के
सुंदर से स्वप्न सजाने को
2
ढोलक की थापें गूँजी
विद्रूप सदा थी क्रंदन की
मौसम पतझड़ बन आया,
पर संग बहारें फूलों की।
3
अप्रत्याशित वो नियति हुई
साजन संगअठखेली की।
सृष्टि की विपरीत दृष्टि थी
तार तार वो चूनर थी।
4
अमर बनी नीरज की स्मृति,
मेरे मन के तारों में ।
झंकृत करते गीत सभी
बस गए हृदय उद्गारों में।
5
आस जगाती है हर पंक्ति,
मौसम कितने गुजर गए
पतझड़ और वसन्त सभी।
जीवन में आकर गुजर गए।
पर न भूले यह गीत कभी हम..........
करवाँ गुजर गया गुबार देखते रहे.........

प्रवीणा त्रिवेदी प्रज्ञा
नई दिल्ली 74

महंगाई जान मारैं

इ महंगाई जान ले लेही बुझात बाय
नाव डगमगात बाय नां
1, केतनउ करि हम कंजूसी
यहकर कना नां छूटैं भूसी
आम जनता सगरउ येहमा
पिसात बाय
नाव डगमगात बाय नां
2, केकर केकर दोषवा लगाई
सभइ लागइ सगै भाई
दोष हमरइ हइ हमही बुझात
बाय नां
नाव डगमगात बाय नां
3, हमरी खेती हमरी बारी
हमहीं करी सिरवारी
दाम लागै खातिर बजट बनात बाय
नाव डगमगात बाय नां
4, पढि कै,लिखि कै बना आफीसर
नाही तो बहुतै बा फजीहत
बेरोज़गारी जियरा कै अभिशाप बाय
नाव डगमगात बाय नां

डॉ नीलू सिंह

राम रमे हैं

राम रमे हैं हर जन में मन में
जन के जीवन में
कर्म क्षेत्र के हर पहलू में
राम रमे हैं हर जनमन में ट ट
मर्यादा पुरुषोत्तम का जीवन
त्रेता में संकल्प बना
कलयुग की देहरी पर भी वह
सुंदर सहज विकल्प बना ट
युग निर्माण के सूत्रों की थाती ही राम का जीवन है,
परिभाषा है जगजीवन की
अलख जगाती जनजन में
राम धरा की धर्मधुरी हैं
जिस पथ पर चल धन्य हो जीवन
धैर्य, उदारता, संयम, साधक
राम ही जीवन की परिभाषा ।

डॉ सुमन सिंह

बेहाल

तुम तो मुझमें उम्र भर चलते रहोगे।
बहन हूँ मैं तड़पती हूँ भाई तेरे हित।
मेरे लिए बोलो कभी तुम क्या कहोगे?
माँ को देखती हूँ मैं छिजते हुए,
और पिता को खुद को ही ठगते हुए।
जब तब जिस तिस में इक्कीस भी आया है आज।
हम करें कैसे तुम्हारे बिन जिंदगी पर नाज।
चुप हैं सभी खोकर के तुम्हें
सुबह न शाम कभी न आराम।।
हमारी वेदना से पल बीतते रोते रोते।
राख होती जिंदगी को देख पाओगे तुम खाक होते।।
तुम्हारे बिन बस बीत रहा है साल।
हम सबका पल पल भारी है,
पल पल कर रहा है बेहाल।।

डा पूनम श्रीवास्तव

सावन सुहावन

घिर आई कारी बदरिया
धरती की धानी चुनरिया
हो आया सावन सुहावन।
देख देख काली घटा मन मयूर नांचे,बरखा की बूंदों को अंग अंग बांचे ।महके कनैर औ गुलाब खूब महके खुशबू बिखराती बेला भी महके।
झूले पड़े बागों में लहक उठी अमवा की डरिया हो आया सावन सुहावन।
घिर आई कारी
बदरिया हो आया सावन सुहावन।
झूम झूम इठलाए खुश होकर बलखाए,
लहराए पिया संग गोरिया हो
आया सावन सुहावन।
घिर आई कारी बदरिया धरती की
धानी चुनरिया हो आया सावन सुहावन।
बड़ा मनभावन है सावन सुहावन है,सुंदर सुगंधित ये सुरसरि सा पावन है।गूंज उठी भोले की नगरिया हो आया सावन सुहावन।
घिर आई कारी बदरिया धरती की धानी
चुनरिया हो आया सावन सुहावन।

डॉ मधु पाठक

ता-ता थैय्या

ता-ता थैय्या,
करे हो मगन मोर रे!

कूके कोयल,
कुहू-कुहू सुन भोर रे!

झूमे डाली,
मचावे पवन शोर रे!

आया सावन,
बरसे घन चहुँ ओर रे!

डॉ अनीता पंडा अन्वी

धार छंद

1)आ रे श्याम।
आई शाम।।
ढूँढ़े नैन।
मैं बेचैन।।
2)आजा मीत।
दे दे प्रीत।।
तेरे नैन।
मेरे चैन।।
3)आती शाम।
तेरे नाम।।
मेरे यार।
मेरा प्यार ।।
4) मेरे श्याम।
लेना थाम।।
मेरे हाथ।
ले लो साथ।।
5) सारी रैन।
जागे नैन।।
होगा प्यार ।
बाहें हार।।

गीता लिम्बू
शिलांग -6

जी ले हर पल में

जिस पल में जी रहा है तू
पल वही तेरा है ।
मत चिन्ता कर तू कल की
वो न तेरा है न मेरा है।
जिस कल की सोच कर के
घुट घुट कर मर रहा है ।
मिल जायेगा ग़र मुकद्दर हुआ,
तू क्यों डर रहा है ।
कर्म ही तेरा धर्म है
फिक्र न तू कर फल की।
होगा वही तेरा ,
जो दाता कर रहा है ।
हँसो, मुस्कुराओ लोगों को
जीना सिखाओ
कर के ऐसा तू लोगों के
ग़म को हर रहा है ।
ज़िन्दगी है देने का नाम
लौट कर आयेगा दिया तेरे पास।
भलाई करके औरों की
दुआओं से जीवन भर रहा है ।।

दया शर्मा
शिलांग(मेघालय)

कम खाओ

कम खाओ।
जल लाओ।।
फल ले लो।
बल पाओ।।

दिन कैसा।
वह प्यासा।।
भज रामा।
हर श्यामा।।

सब माया।
यह काया।।
सच आत्मा।
परमात्मा।।

दिन आये।
तम जाये।।
सच बोले।
दिन खोले।।

कवितायेँ

नल खोलो।
जल लेलो।।
घट लाओ।
भर जाओ।।

तुम मेरे।
सब तेरे।।
जग प्यारे।
हरि न्यारे।।

कल मेरे।
घर आये।।
जग राजा।
कर पूजा।।

हम टूटे।
सब छूटे।।
सब खोये।
अब रोये।।

मल्लिका डे

मां की पाती

एक पाती बिना पते वाली,
शायद गलती से डाकिया ने,
मेरे दरवाज़े पर थी डाली।
आखिर खोल दी मैंने,
क्या लिखा था,
कुछ समझ नहीं आया,
न कोई नाम था न हस्ताक्षर,
किसने लिखी, किसको लिखी,
न वर्ण, न थे अक्षर,
किसकी है जान नहीं पाया।
बस, ऊन के फंदों सी लिखावट,
न कोई शब्द रच पाए थे,
न ही कोई वाक्य बन पाए थे,
फिर भी न जाने क्यों लगा,
उनमें कुछ जज़्बात थे,
अहसास थे,
कुछ अनजानी सी आकृतियां थी,
कहीं चांद नज़र आता था,
कभी रोटी बन जाता था,
कहीं काला टीका नज़र आता था,
कहीं धब्बा बन जाता था।
किसने लिखी होगी,
किसको लिखी होगी,
कुछ समझ नहीं आता था,
शायद किसी मां की होगी,
जिसे लिखना नहीं आता था।
हां! हां! एक मां की ही होगी,
अपने परदेसी बच्चे को
कुछ लिखना चाहती होगी,
शायद कोई बूढ़ी मां होगी,
कांपते हाथों से लिखी होगी,
अपने भावों को,
एहसासों को,
उसके आने के इंतजार को,
छुट्टी का सुन मुंह पर आने वाली निश्चल
मुस्कान को,
लंबी उम्र के लिए
की जाने वाली प्रार्थनाओं को,
हर पल देती दुआओं को,
और न जाने क्या क्या सोचा होगा,
जो लिख डाला,
इस पाती में,
हां, ये है एक मां की पाती,
और कौन कहता है,
मां अनपढ़ है जो लिख नहीं पाती।

नीता शर्मा
शिलांग, मेघालय

कहमुकरी

1) बादल बरसे मन हर्षाये
घुमड़ घुमड़ के मन तरसाए
तन पर मेरे छाए योवन
क्या सखि साजन?न सखि सावन

2) सबको भाता सबका साथी
सबको दिशा दिखाता राती
सबको लगता है वह प्यारा
क्या सखि साजन?न सखि तारा।
3) ना देखूं तो चैन न आये
हरदम मुझे खूब हंसाए
प्यारा है बेगाना होकर
क्या सखि साजन?ना सखि जोकर।

4) मुंडेर पर रखूं बाट देखूं
घर को रोशन करके देखूं
संग में उसके जले है जिया
क्या सखि साजन? ना सखि दीया

धार छ्न्द

1) मैंने ड़ोर।
थामी छोर।।
पूजूं राम।
होगा काम।।

2) देखो फूल।
जाड़ों धूल।।
देदो नीर।
जागो वीर।।
3) देखो भोर।
नाचे मोर।।
लाते हास।
पाते आस।।
4) मेरे तात।
मानो बात।।
होगा साथ।
मॉं का हाथ।।

देवी छंद

1) सखि आजा।
सुन बाजा।।
अब आ री।
धुन प्यारी।।
2) जग सारा।
रब प्यारा।।
रवि आये।
तम जाये।।
3) सब देखें।
यह सोचें।।
इक तारा।
जग प्यारा।।
4) तुम आये।
हम साये।।
ड़र छोड़ो।
मन जोड़ो।।

कृष्ण या वपु छंद

1) आया नल।
लेलो जल।।
पाओ बल।
खेलो दल।।
2) आओ सब।
पूजें रब।।
दौड़े हम।
छौडें ग़म।।
3) आये घन।
नाचे मन।।
डोले तन।
पायें धन।।
4) कैसे पल।
होंगे कल।।
खेलो रंग।
मेरे संग।।

तिन्ना छंद

1) रानी आयी।
बाजा लायी।।
राजा आओ।
थोड़ा गाओ।।
2) मेघा आये।
पानी लाये।।
नाचे मैना।
होगी रैना।।
3) कागा आये।
मीठा खाये।।
जागी रैना।
रोये नैना।।
4) छोड़ो बातें।
होंगी रातें।।
सोचो आगे।
मोह त्यागे।।

सुनीता भट्ट गोजा
जम्मू-कश्मीर जम्मू।

पुरुष काव्य गोष्ठी की कविताएँ

तपती तेज दुपहरी में

तपती तेज दुपहरी में
बारिश का मौसम लगता है,
मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।
लहराकर जुल्फों को अपनी जब मुस्काने देता है,
मस्त मगन होकर आया भीगा सा सावन लगता है ।।

मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।।

बातों में मिठास है मिश्री सी,दिल में घर कर जाती है
साँसों की खुशबू से, महका हुआ उपवन लगता है ।।
देख के उसको हँसता, दिल की धड़कन इतराती है,
मानो वो इस दिल के,धड़कन की सरगम लगता है ।।

मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।।

छनक-छनक पायलिया मधुरम संगीत सुनाती है,
तब सूने से दिल में मेरे,गीतों का गुंजन लगता है ।।
नैनों के कारे काजल से, वो करता है काला जादू ,
बाबू-सोना कहता है जब,मोहक चितवन लगता है ।।

मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का वो मरहम लगता है ।।

कटि उसकी कटीली कमाल,डाल फूलों की जैसे,
चाल है जैसे खुश होकर,लहराता चमन लगता है ।।
देख के उसको दिल के अरमान सभी खिल जाते हैं,
इस दिल के अरमानों का वो, नवजीवन लगता है ।।

मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।।

मन के भाव हैं सरल सहज,निर्मल है उसकी वाणी,
वो मुझको सादगी सुन्दरता का, संगम लगता है ।।
बाँह पसारे दिल से जब भी उसने मेरा नाम पुकारा,
तब उसके प्रेम का 'साथी' मुझे समर्पण लगता है ।।

मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।।

तपती तेज दुपहरी में बारिश का मौसम लगता है,
मेरे दर्द-ए-दिल के ज़ख्मों का मरहम लगता है ।।
लहराकर जुल्फों को अपनी जब मुस्काने देता है,
मस्त मगन होकर आया भीगा सा सावन लगता ।।

अजय वर्मा 'साथी'

सावन की बदरी

मैं भी ढूँढ़ूँ अपने पिय को , बनके सावन की बदरी ।
घूमी सागर से पर्वत तक ,
हेरी सब कोना-अँतरी ।।

देखी सागर तट की शोभा
सोची इसमें ही वह होगा
उसके बिना यहाँ हरियाली
कैसे इतनी है पसरी ?

देखी बालाएं इतरातीं
सखि को झूला खूब झुलातीं
काली अलकों के गजरे से
खुशबू इधर-उधर बिखरी ।

आयी देवभूमि उत्तरांचल
नदियाँ बहतीं करती कल-कल
पहुँची शिवघर मानसरोवर
देखी यक्षों की नगरी ।

कहीं पर मिला नहीं प्रियतम
हो गये लोचन मेरे नम
पिया की करते-करते याद
धवल से हो गयी मैं कजरी ।

देख कस्तूरी मृग मम पीर
बहाने लगा नयन से नीर
कहा, मत तुम भटको नभ में
दो ढरका नेह भरी गगरी ।

सखी तुम होना नहीं उदास
तुम्हारा प्रियतम तो है पास
झाँक उर में तुम ही घनश्याम
बसी भीतर राधा बिजुरी ।

हुई हूँ अब मैं दीवानी
फिरूँ अब बरसाती पानी
बुझाती हूँ कण-कण की प्यास
सुनाती सावन में कजरी ।

डॉ. वीरेन्द्र कुमार तिवारी

नारी शक्ति का वंदन

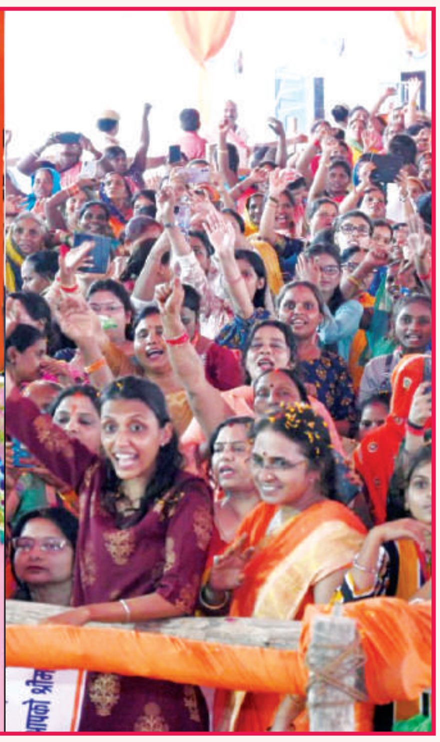

उत्तर प्रदेश में डबल इंजन की सरकार महिलाओं को जन्म से लेकर जीवन के हर पड़ाव में उनकी आत्मनिर्भरता एवं खुशहाली के लिए कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, सुरक्षित मातृत्व, निःशुल्क टीकाकरण, स्नातक तक निःशुल्क शिक्षा, सरकारी नौकरियों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व, मुफ्त गैस कनेक्शन एवं इज्जतघर (शौचालय) की सुविधा से महिलाओं के जीवन में बड़ा बदलाव आया है। पीएम आवास योजना, पीएम स्वामित्व योजना में महिलाओं को मालिकाना हक दिया गया है। महिलाओं व किशोरियों के प्रति होने वाली हिंसा के विरुद्ध सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ किया गया है। मिशन शक्ति अभियान से जुड़कर महिलाएं स्वावलंबन की राह पर आगे बढ़ रही हैं।

- 1.50 लाख से अधिक महिलाओं को सरकारी नौकरी
- पॉक्सो अधिनियम एवं महिलाओं के खिलाफ अपराधों में सजा दिलाने में उत्तर प्रदेश देश में प्रथम
- स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत 2.75 करोड़ शौचालयों (इज्जतघर) का निर्माण, 10 करोड़ लोग लाभान्वित
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के अंतर्गत 60 लाख से अधिक मातृशक्ति लाभान्वित
- पीएम स्वामित्व योजना के तहत 66 लाख से अधिक घरौनी वितरित
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना में 1.83 करोड़ परिवारों को निःशुल्क गैस कनेक्शन
- बालिकाओं को स्नातक तक नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था
- महिला हेल्पलाइन 1090 सेवा में 99.55 प्रतिशत शिकायतों का निस्तारण
- 3,195 एंटी रोमियो स्क्वॉयड गठित
- महिला रात्रि एस्कॉर्ट सुरक्षा योजना : रात्रि 10 बजे से सुबह 6 बजे तक सहायता हेतु कॉल किए जाने पर यूपी-112 द्वारा महिला को एस्कॉर्ट कर सुरक्षित गंतव्य तक पहुंचाने की व्यवस्था
- 31.50 लाख निराश्रित महिलाओं को 1000 रुपये प्रतिमाह पेंशन
- आजीविका मिशन के माध्यम से 10 लाख सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर 1 करोड़ महिलाओं को जोड़ा गया
- 58,000 से अधिक महिलाओं की बैंकिंग कॉरेस्पोंडेंट (बीसी सखी) के रूप में नियुक्ति
- मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के अंतर्गत 19.50 लाख बेटियां लाभान्वित
- महिला चालकों एवं परिचालकों द्वारा उत्तर प्रदेश परिवहन निगम की पिंक बसों का संचालन
- मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य एवं कोविड) के अंतर्गत 65,132 बच्चे लाभान्वित